सामाजिक चेतना के युगप्रवर्तक : कबीर

– डॉ. कामायनी गजानन सुर्वे

१. प्रस्तावना (Introduction)

साहित्य और समाज का गहरा संबंध है।रचनाकार का रचना–विधान अपने समय की उपज होता है।कबीर की रचनाओं में तत्कालीन समाज में व्याप्त अंधविश्वास,केशमुंडन जैसी गलत सामाजिक प्रथाएँ,बाह्याचार का खुलकर विरोध प्रकट हुआ है। 'बीजक'कबीर की प्रामाणिक रचना है।'बीजक' के तीन भाग हैं– साखी,सबद(पद) और रमैनी।'बीजक' में कबीर के परिवर्तनवादी विचार प्रस्तुत हुए हैं।

२. विचार ह्विमर्श (¦iscussion)

प्रस्तुत विषय पर विचार–विमर्श के कुछ पहलू निम्नांकित हैं :

साहित्य और समाज का अन्योन्य संबंध है। कोई भी साहित्यकार अपनी युगीन स्थितियों से प्रभावित होता है।रचनाकार अपनी रचना में तात्कालीन स्थितियों का चित्रण करता है।कबीर के समय की राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ अत्यंत विशृंखलित थीं।समाज में वर्णाश्रम व्यवस्था प्रचलित थी।हिंदू–मुस्लिम विभेद की खाइयाँ बढ़ती जा रही थीं।जातिभेद का अत्यधिक बोलबाला था।समाज में कई अंधविश्वास थे।विविध संप्रदायों में मतभिन्नता थी। मुगलों के सल्तनत काल में विदेशी आक्रमणों के कारण सामान्य जनता भयभीत थी। कबीर ने इन सारी स्थितियों का गंभीरता से अवलोकन किया और अपने विवेकी विचारों के तहत जनसाधारण का मार्गदर्शन किया।कबीर अनपढ थे। इसके बावजूद अपने जीवनानुभवों के आधार पर उन्होंने जो कुछ विचार प्रस्तुत किए हैं, वे तत्कालीन एवं आज के इक्कीसवीं शताब्दी के समाज के लिए भी पथप्रदर्शक हैं। कबीर क्रांतिकारी हैं।युग को परिवर्तित करने की ताकत कबीर के विचारों में परिलक्षित होती है।यही कारण है कि उन्हें 'युग प्रवर्तक' कहा जाता है। कबीर के साहित्यिक रूप की अपेक्षा उनका समाजसुधारक रूप अधिक आलोकित हुआ है ।

एक महान क्रांतिकारी होने के कारण कबीर ने तत्कालीन समाज में परिव्याप्त गलत सामाजिक रुढी–परंपराओं के विरुद्ध आवाज उठाई, धार्मिक पाखंड का विरोध किया, हिंदू–मुस्लिम एकता स्थापित की, बाह्याडंबर को

बिल्कुल स्थान नहीं दिया, आचरण की शुद्धता पर बल दिया।कबीर घुमक्कड वृत्ति के होने के कारण संपूर्ण भारत में घूमे थे। उन्होंने जनसाधारण के बीच रहकर जनसाधारण की भाषा में अपने क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किए।

कबीर के समय में पंडित, मुल्ला-मौलावियों का समाज में आतंक था। पंडित सामान्य लोगों की ओर तुच्छता से देखते थे । कबीर ने पोथी पढकर पंडित होने की अपेक्षा प्रेमभरे,इंसानियात भरे आचरण-व्यवहार को अधिक महत्त्व दिया है। कबीर कहते हैं-

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोइ ।
एकै आषिर पीव का पढ़ै सो पंडित होइ ।। (दास, श्यामसुंदर,३८)

अर्थात जो सभी से प्रेमपूर्वक व्यवहार करेगा वही सही मायने में पंडित है।हिंदू पंडित के साथ ही साथ 'काजी कौन कतेब बखाने'पद में कबीर ने मुस्लिम धर्मगुरू अर्थात काजी की पोल खोल दी है । कबीर ने शोषित एवं पीडित जनसाधारण को शोषण से मुक्ति की राह दिखलाई । उन्होंने जनसाधारण का शोषण करने वाली परंपरागत मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह किया।कबीर के सामाजिक विद्रोह का अनुशीलन करते समय इस बात की ओर हमें ध्यान देना चाहिए कि कबीर का समय जनतंत्र का न होकर राजतंत्र का है।उस वक्त स्वतंत्रता,समता,बंधुता एवं न्याय जैसे मूल्य प्रदान करने वाला भारतीय संविधान अस्तित्व में नहीं था ।बावजूद इसके कबीर ने तत्कालीन भारतीय जनता को जनतांत्रिक मूल्यों से अवगत कराया।

कबीर ने एकेश्वरवाद का समर्थन करते हुए,राम-रहीम,केशव-करीम सभी को एक ही मानते हुए हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित की है-

हमारै रांम रहीम करीमा केसो,अलह रांम सति सोई।
बिसमिल मेटि बिसंभर एकै,और न दूजा कोई।। (११५)

कबीर ने भक्ति में बाह्य आडंबर का विरोध किया है ।इस संदर्भ में डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं-चाहे मुसलमानी धर्मके बाह्याचारका खण्डन हो या हिंदू मतके, उन्होंने(कबीर ने) अपने पूर्ववर्ती अक्खर योगियोंकी भाँति महज खण्डनके लिये खण्डन नहीं किया। उनका केंद्रीय विचार भक्ति था। वे भक्ति को प्रधान मानते थे। उसके रहनेपर बाह्याचार का होना न होना गौण बात है। ऐसा जरूर है कि वे भक्ति की प्राप्ति के बाद बाह्याचार का स्वयं नष्ट हो जाना जैसी बात पर विश्वास करते हैं। उनके मत से भक्ति और बाहाडम्बर का संबंध सूर्य और अधकारका-सा है। एक साथ दोनों नहीं रह सकते।(द्विवेदी,१३५)

कबीर ने माया को महाठगिनी कहा है।कबीर के अनुसार साधक को अविद्या माया से बचकर रहना चाहिए।माया के चंगुल में फँसे हुए मनुष्य का मन विविध

प्रकार की आशा एवं तृष्णा के कारण अतृप्त रहता है और उसका सर्वनाश होता है।कबीर के शब्दों में ह्न

माया मुई न मन मुवा,मरि मरि गया सरीर।
आसा त्रिष्णां नां मुई,यों कहि गया कबीर ।।(३३)

मनुष्य जीवन की वास्तविकता का वर्णन करते हुए कबीर ने आचरण की शुद्धता पर बल दिया है ।झूठे व्यक्ति को कोई दूसरा झूठा व्यक्ति मिल जाता है,तो दोनों की अच्छी बनती है।परंतु झूठे व्यक्ति को सच्चा व्यक्ति मिल जाने पर स्नेह उत्पन्न नहीं हो सकता क्योंकि दोनों की प्रवृत्ति में अंतर है। कबीर कहते हैं -

झूठे कों झूठा मिलै,दूणां बधै सनेह ।
झूठे कों साचा मिलै,तब ही तूटै नेह ।। (४३)

कबीर ने जातिभेद का विरोध किया है।'जाति न पूछो साधु की,पूछ लीजिए ज्ञान' कहते हुए उन्होंने बताया है कि केवल उँचे कुल में जन्म लेने से कुछ नहीं होता । उँचे कुल में जन्म लेने वाले मनुष्य के कर्म अच्छे नहीं हैं, तो वह स्थिति सोने के कलश में मदिरा भरने जैसी है-

ऊँचे कुल क्या जनमिया,जे करणीं न ऊँच होइ ।
सोवन कलस सुरै भरया ,साधु निंद्या सोइ ।। (४८)

कबीर के अनुसार निर्गुण ईश्वर एक ही है और उसे अन्यत्र ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है।यह बताते हुए कबीर ने कस्तूरीमृग का उदाहरण दिया है।जिस प्रकार कस्तूरीमृग की नाभि में कस्तूरी नामक खुशबूदार द्रव्य होता है, परंतु वह स्वयं यह बात नहीं जानता और खुशबू की तलाश में सर्वत्र भटकता घूमता है, वैसे ही अज्ञानी जीव स्वयं में ईश्वर का अस्तित्व न ढूँढ़कर उसे ढूँढ़ते हुए इधर-उधर भटकता घूमता रहता है ।

कस्तूरी कुंडली बसे, मृग ढूँढै बन माहि ।
ऐसे घटि-घटि राम हैं दुनिया देखै नाहीं ।।(८१)

कबीर ने सदुरू का महत्त्व अवश्य बताया है, परंतु अज्ञानी गुरु की पोल भी खोल दी है।अंधे गुरु का शिष्य भी अंधा ही होगा और दोनों एक-दूसरे को ठेलते हुए अज्ञानरूपी कुँए में गिर जाएँगे।यह कबीर का स्पष्टवक्तापन है ।

जाका गुरु भी अंधला चेला खरा निरंध ।
अंधे अंधा ठेलिया, दुन्यूं कूप पडंत ।। (२)

कबीर ने मनुष्य के सद्गुणों को महत्त्व दिया है ।कबीर के अनुसार जब हमारे गुणों की परख करने वाला कोई व्यक्ति है, तभी उन गुणों का लाख गुना महत्त्व है, अन्यथा वे गुण कौडीमोल हो जाते हैं-

जब गुण को गाहक मिलै, तब गुण लाख बिकाई।

जब गुण कौं गाहक नहीं, तब कौडी बदले जाइ ।।(७८)

निंदक के बारे में कबीर कहते हैं कि निंदक को हमेशा अपने घर के पास कुटिया बनाकर रहने के लिए स्थान दीजिए क्योंकि वह बार-बार आपकी निंदा करता रहेगा।इससे आपके व्यक्तित्व में सुधार आएगा । निंदक आपको बिना साबून और बिना पानी निर्मल कर देगा।मराठी के विख्यात संत तुकाराम महाराज भी कहते हैं 'निंदक तो पर उपकारी।काय वर्णूं त्याची थोरी।।' निंदा करने वाले व्यक्ति को सकारात्मक रीति से लेना चाहिए-

निंदक नेड़ा राखिये आंगणि कुटी बंधाई ।
बिन साबण पांणीं बिना, निरमल करै सुभाइ ।।(८२)

इस प्रकार दैनंदिन आचार-व्यवहार में उपयुक्त बातें, भक्ति में बाह्य आडंबर का विरोध, जातिभेद का विरोध, मोह-माया का विरोध, सामाजिक एवं धार्मिक यथार्थ का प्रतिपादन एवं उनमें परिवर्तन की माँग करते हुए कबीर ने युगप्रवर्तन का कार्य किया है ।कबीर की भाषा को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'साधुक्कडी'कहा है, तो आचार्य डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी उन्हें 'वाणी के डिक्टेटर'कहते हैं।

४. निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कबीर कवि की अपेक्षा समाजसुधारक अधिक हैं।कबीर का सामाजिक दृष्टिकोण अत्यंत यथार्थपरक एवं क्रांतिकारी रहा है ।कबीर ने अपने युग को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नवविचार प्रदान किए हैं। कबीर के सामाजिक विचार संपूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ होने के साथ-साथ मौलिक एवं प्रासंगिक हैं। कबीर के समतावादी विचारों में जनतांत्रिक मूल्यों के बीज मिलते हैं।कबीर ने दैनंदिन जीवन-व्यवहार के उदाहरण देकर जनभाषा में अपने विचार अभिव्यक्त किए हैं। युगप्रवर्तक कबीर जनसाधारण के लिए निश्चय ही पथप्रदर्शक है ।

संदर्भ –

आधार ग्रंथ –

१. दास, श्यामसुंदर.कबीर ग्रंथावली.प्रयाग- इंडियन प्रेस.

संदर्भ ग्रंथ –

१. (डॉ.)द्विवेदी, हजारीप्रसाद, कबीर, बंबई : हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, १९४२.